राजा से बुद्धिमान

कैमरून की लोककथा

राजा से बुद्धिमान

कैमरून की लोककथा
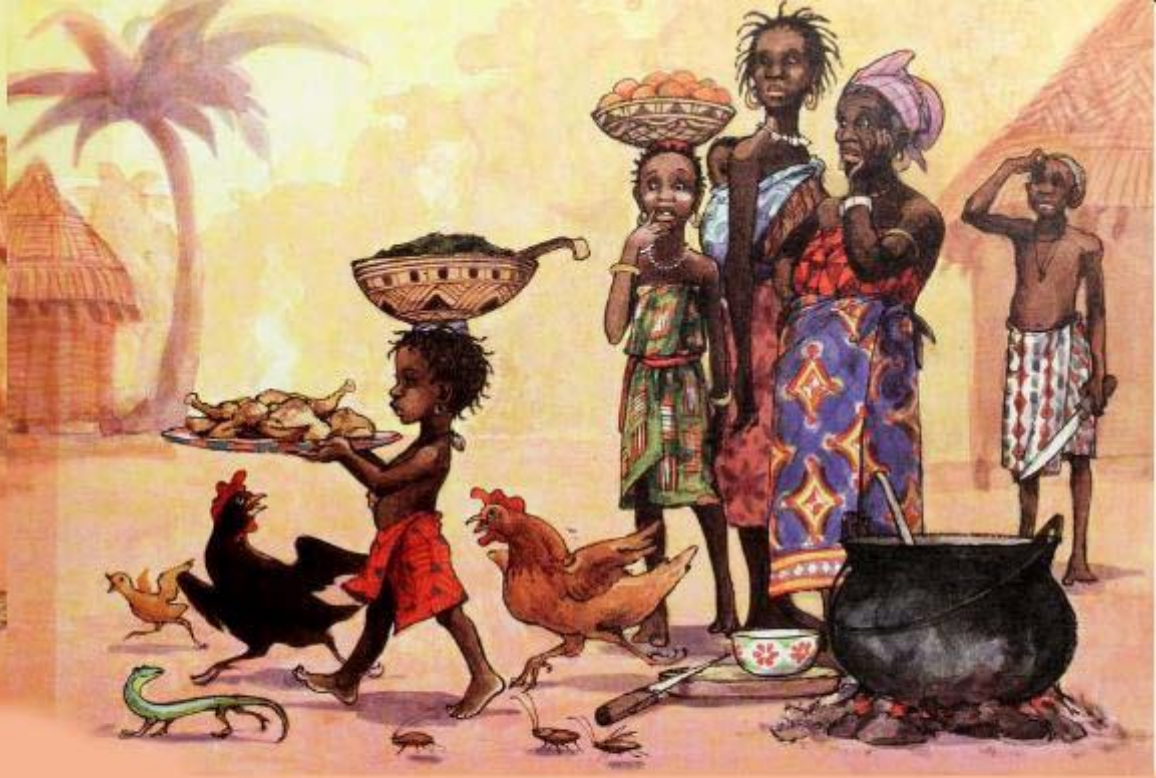
सात गाँव के देश में एक आदमी और एक औरत रहते थे. वह भोले-भाले किसान थे और सदा प्रसन्न रहते थे. उन्हें बस एक ही दुःख था, उनकी कोई सन्तान नहीं थी. लेकिन फिर आखिरकार उस औरत ने एक बच्ची को जन्म दिया. उन्होंने उसका नाम मान्तह रखा.

शीघ्र ही पता चल गया कि मान्तह एक असाधारण बच्ची थी. वह एक वर्ष की भी न हुई थी कि वह चलने लगी और बातें करने लगी.

दो वर्ष की होते-होते वह सातों गाँव के लोगों की भाषा बोलने लगी थी. वह पशुओं से भी बातें कर सकती थी. जब वह तीन वर्ष की हुई वह अपने माता-पिता के लिए खाना बना सकती थी. उसकी चतुराई देख कर गाँव के लोग दंग रह जाते थे. इसलिए वह उसे 'राजा से बुद्धिमान' कह कर बुलाने लगे, क्योंकि वह सात गाँव के राजा से अधिक बुद्धिमान थी.

शीघ्र ही राजा को इस बच्ची के बारे में पता लगा.

“ऐसा कैसे हो सकता है?” वह सोचने लगा. “एक छोटी लड़की, जो अभी चार वर्ष की भी नहीं हुई है. यह अपमानजनक है!”

“जाओ और उस बच्ची मान्तह का पता लगाओ,” उसने सिपाहियों से कहा. “वही जिसे मूर्ख गाँव वाले ‘राजा से बुद्धिमान’ बुलाते हैं. उसे जंगल के बीच में ले जाकर छोड़ दो. वहाँ सांप और चीते उसके काम तमाम कर देंगे.”
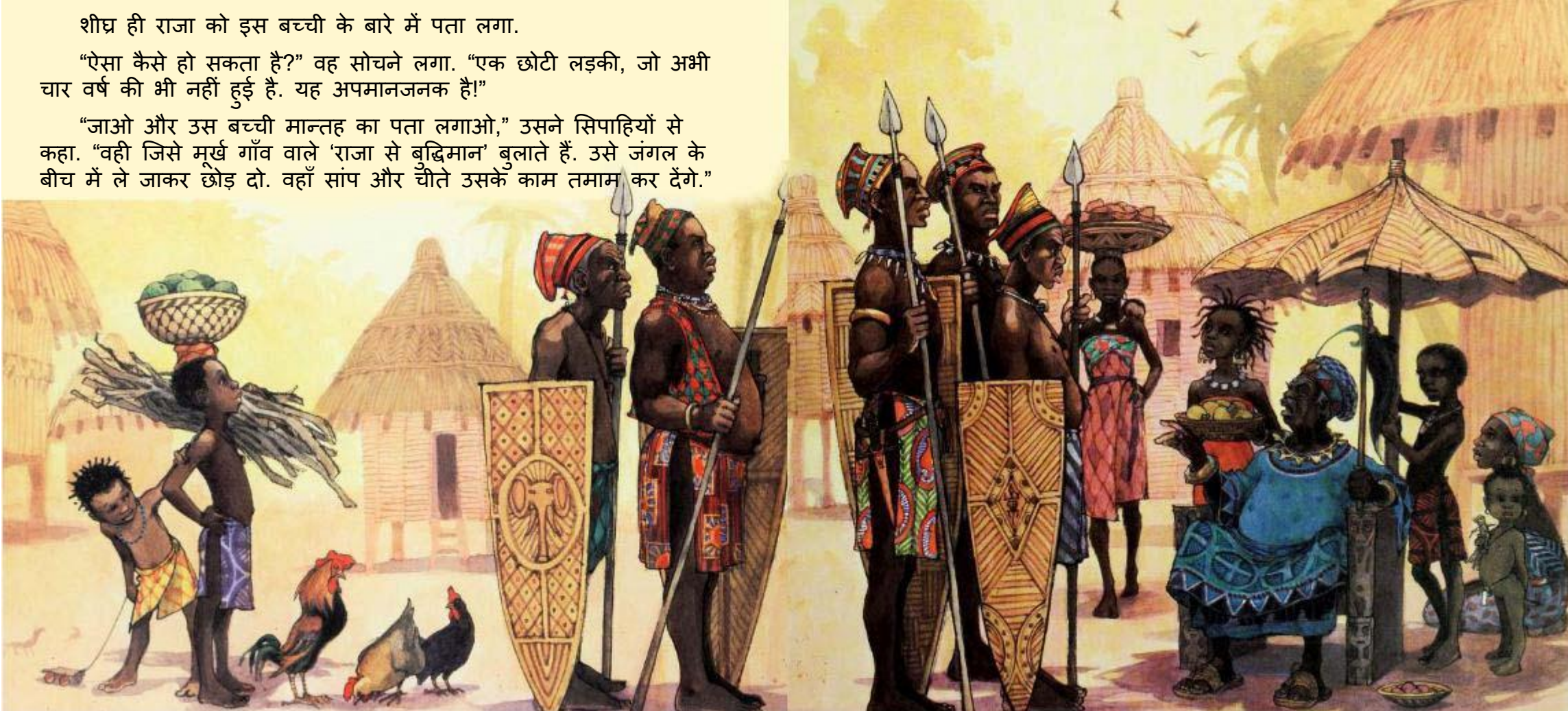
एक सुबह जब उसके माता-पिता खेत में काम करने गये थे सिपाही ‘राजा से बुद्धिमान’ को पकड़ने के लिए आये. जब ‘राजा से बुद्धिमान’ ने सिपाहियों को रास्ते पर चलते हुए देखा तो उसने झटपट चूल्हे से राख निकाल कर एक थैले में भर ली. उसने थैले में एक छोटा सा सूराख कर दिया और उसे अपनी कमर पर बाँध लिया.

सिपाहियों ने जब उस नन्हीं बच्ची को देखा जिसने राजा को इतना नाराज़ कर दिया था तो वह हँसने लगे. उन्होंने उसे उठा लिया और जंगल के भीतर ले आये और वहां छोड़ कर लौट आये. उनके जाते ही थैले से निकल कर ज़मीन पर गिरी हुई राख के साथ-साथ वह चलने लगी. शीघ्र ही वह सुरक्षित अपने घर पहुँच गई.

कुछ वर्ष बीत गये. समय बीतने के साथ, 'राजा से बुद्धिमान' और बुद्धिमान हो गई. फसल बोने के नये तरीके सोच कर उसने किसानों को बताये. जल्दी ही किसान पहले से दो गुणा अधिक सब्ज़ियाँ पैदा करने लगे. फिर उसने एक ऐसे चाकू का आविष्कार किया जिससे किसान पहले से आधे समय में फसल काट कर खेत साफ कर सकते थे.

'राजा से बुद्धिमान' बहुत लोकप्रिय हो गई. जब भी लोगों को कोई कठिनाई आती वह उससे सलाह करने आते.
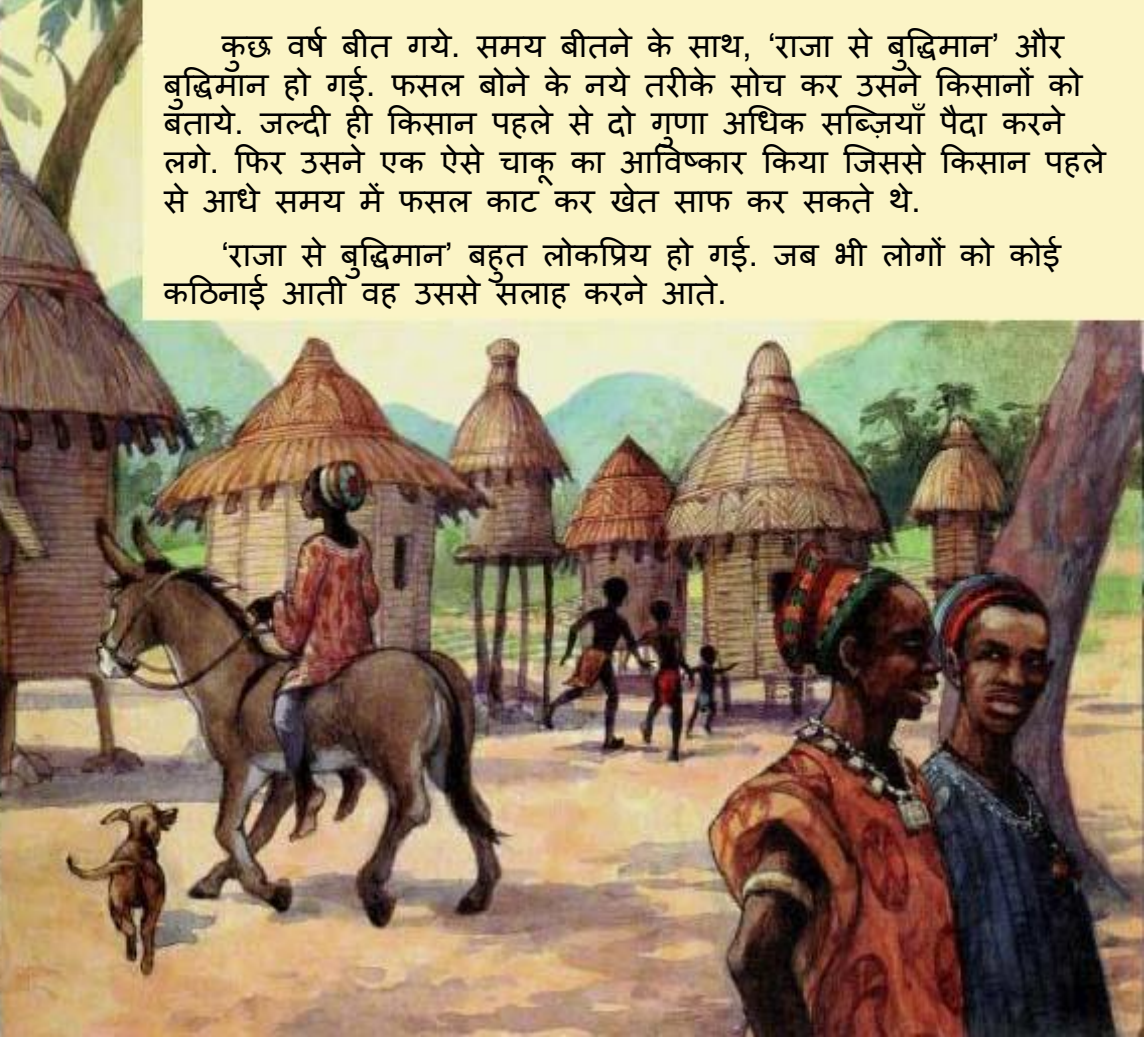
राजा ने अफवाह सुनी कि 'राजा से बुद्धिमान' अभी भी जीवित थी. वह क्रोधित हो गया और उसने निश्चय किया कि वह उससे सदा के लिए छुटकारा पा लेगा. उसने सिपाहियों को आदेश दिया कि महल के पीछे एक गड्ढा खोदें. उसने सोचा कि 'राजा से बुद्धिमान' को उस गड्ढे में कैद कर के रखेगा जब तक वह की भूख से मर न जायेगी.

जब 'राजा से बुद्धिमान' ने सुना कि सिपाही गड्ढा खोद रहे थे तो उसने अनुमान लगा लिया कि राजा क्या करना चाहता था. उस रात जब उसके माता-पिता सो रहे थे वह घर से बाहर चली गई और अपने मित्र छछुन्दरों से कहा कि उसका एक काम करें

कुछ दिनों के बाद राजा के सिपाही 'राजा से बुद्धिमान' को ले जाने के लिए आये. उसके माता-पिता रोने लगे लेकिन मान्तह बिना कोई झमेला किये उनके साथ चली गई. जब सिपाहियों ने उसे गड्ढे में फेंक दिया तो उसने वह गुफा ढूँढ ली जो छछुन्दरों ने उसके लिए बनाई थी. उस गुफा के रास्ते वह अपने घर लौट आई.
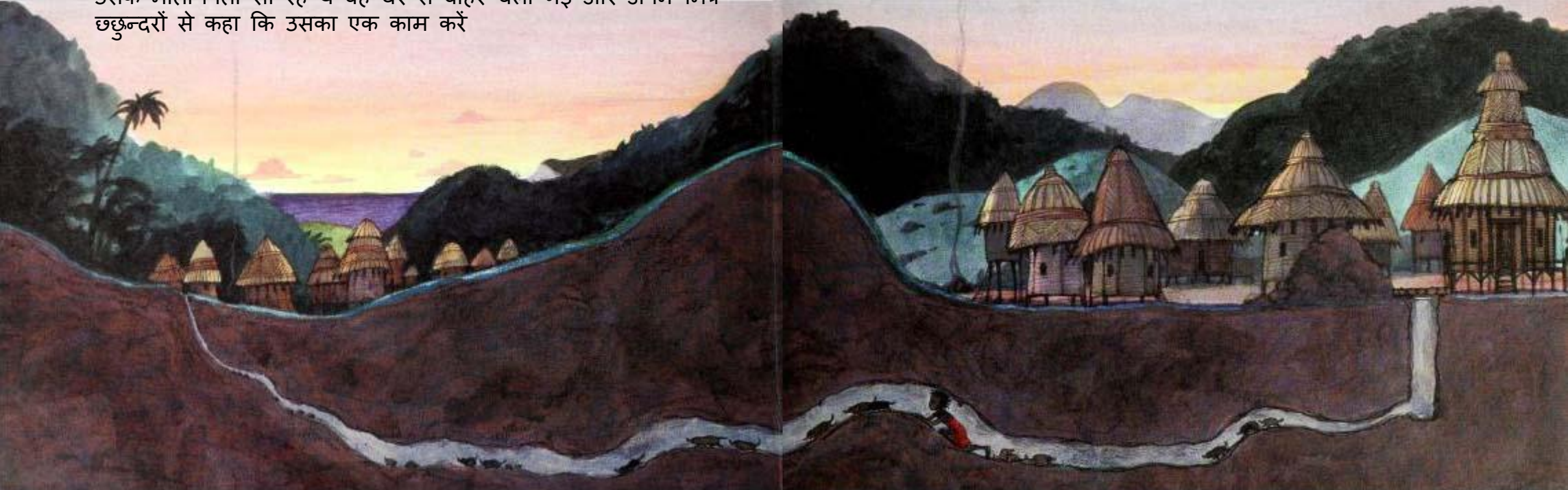
जब राजा को पता चला कि 'राजा से बुद्धिमान' उसके चंगुल से निकल कर भाग गई थी तो वह विचलित हो गया. वह छोटी लड़की बहुत शक्तिशाली होगी, उसने सोचा. अच्छा होगा कि उसे अपने निकट रखा जाये, जहाँ हर समय वह उस पर निगरानी रख पाए. उसने आदेश दिया कि मान्तह उसके महल में आकर रहे. महल में राजा मान्तह को हर समय कपड़े धोने और अनाज कूटने में व्यस्त रखता.

हर शाम, दिन का कार्य समाप्त करने के बाद, राजा मान्तह को उसका हुक्का लाने को कहता. आग के निकट बैठ कर, हुक्का पीते-पीते, राजा राज्य की समस्याओं के बारे में अपने-आप से बातें करता. मान्तह चुपचाप पीछे खड़ी रहती. जब राजा चुप हो जाता तो मान्तह अपने सुझाव उसे देती. राजा उसकी अच्छी सलाह को मान लेता. सातों गाँव के निवासी प्रसन्न और संपन्न हो गये.

एक दिन एक सन्देश वाहक राजा के पास आया. “एक दूर देश का शक्तिशाली सम्राट अपनी बेटी का विवाह उस वर के साथ करना चाहता है जिसे वह राजकुमारी के योग्य पायेगा,” उसने बताया. राजा बहुत प्रसन्न हुआ. सम्राट की बेटी के साथ विवाह करने से उसका प्रभाव और धन दोनों ही बढ़ जायेंगे, उसने सोचा. उसने सम्राट की राजसभा में जाने का निर्णय किया.

अपने साथ वह अपने दस विश्वस्त सैनिक ले गया. उनके लिए खाना बनाने के लिए वह मान्तह को भी साथ ले गया. सारे दल ने सागर के ऊपर तीन दिन और तीन रातें यात्रा की.

सम्राट ने राजा और उसके दल का स्वागत किया. उसने अपनी बेटी तित्याह को बुलाया. यद्यपि कि वह अभी छोटी थी, वह संध्या के तारे के समान सुंदर थी.

इतनी सुंदर लड़की के साथ विवाह करने की बात सोच कर राजा अति प्रसन्न हुआ. “सम्राट,” उसने कहा. “ मैं आपको वचन देता हूँ कि मैं इसका वैसे ही ध्यान रखूँगा जैसे किसी बहुमूल्य रत्न का रखा जाता है.”

"शायद तुम ऐसा ही करोगे," सम्राट ने कहा. "लेकिन अभी वह छोटी बच्ची ही है. कई वर्ष बीतने के बाद ही वह विवाह योग्य होगी. अगर तुम्हें लगता है कि तुम इसका ध्यान रख सकते हो तो इस बात का प्रणाम दो.

"जब से तित्याह का जन्म हुआ है इसे भूख बहुत कम लगती है. अगर तुम मेरी बेटी के साथ विवाह करना चाहते हो तो प्रमाणित करो कि तुम इसे ठीक से भोजन करा पाओगे."

राजा ने मान्तह को आदेश दिया कि तित्याह के लिए स्वादिष्ट भोजन बनाए. उसने चावल और मुर्गी का मांस और सूप और केक और सब्ज़ियाँ पकाई. उसने आम और केले और नारियल और मूंगफली इकट्ठी की. जब खाना तैयार हो गया, राजा ने तित्याह को बुलाया.

"देखो यह स्वादिष्ट खाना जो तुम्हारे लिए बनाया है," राजा ने कहा, "आओ और यह सब खाओ."

लेकिन तित्याह ने अपने कंधे उचकाये और कहा, "मुझे भूख नहीं लगी है."

"तित्याह रुको," मान्तह ने कहा. "मैं तुम्हें कुछ दिखलाना चाहती हूँ." मान्तह ने अपनी कमर पर बंधी डोरी खोल ली जिस पर घंटियाँ बंधी थी. वह घंटियां बजाने लगी.
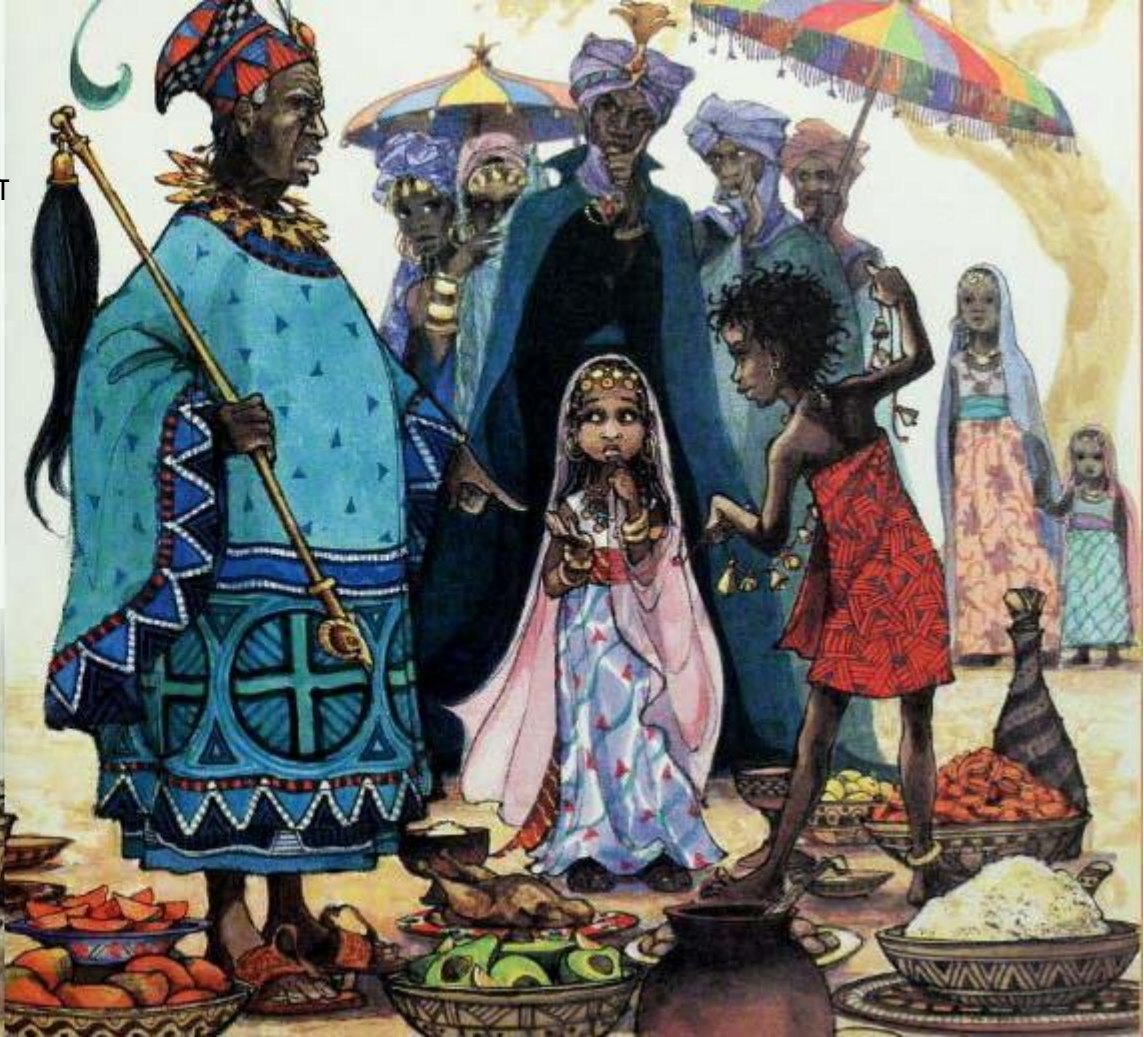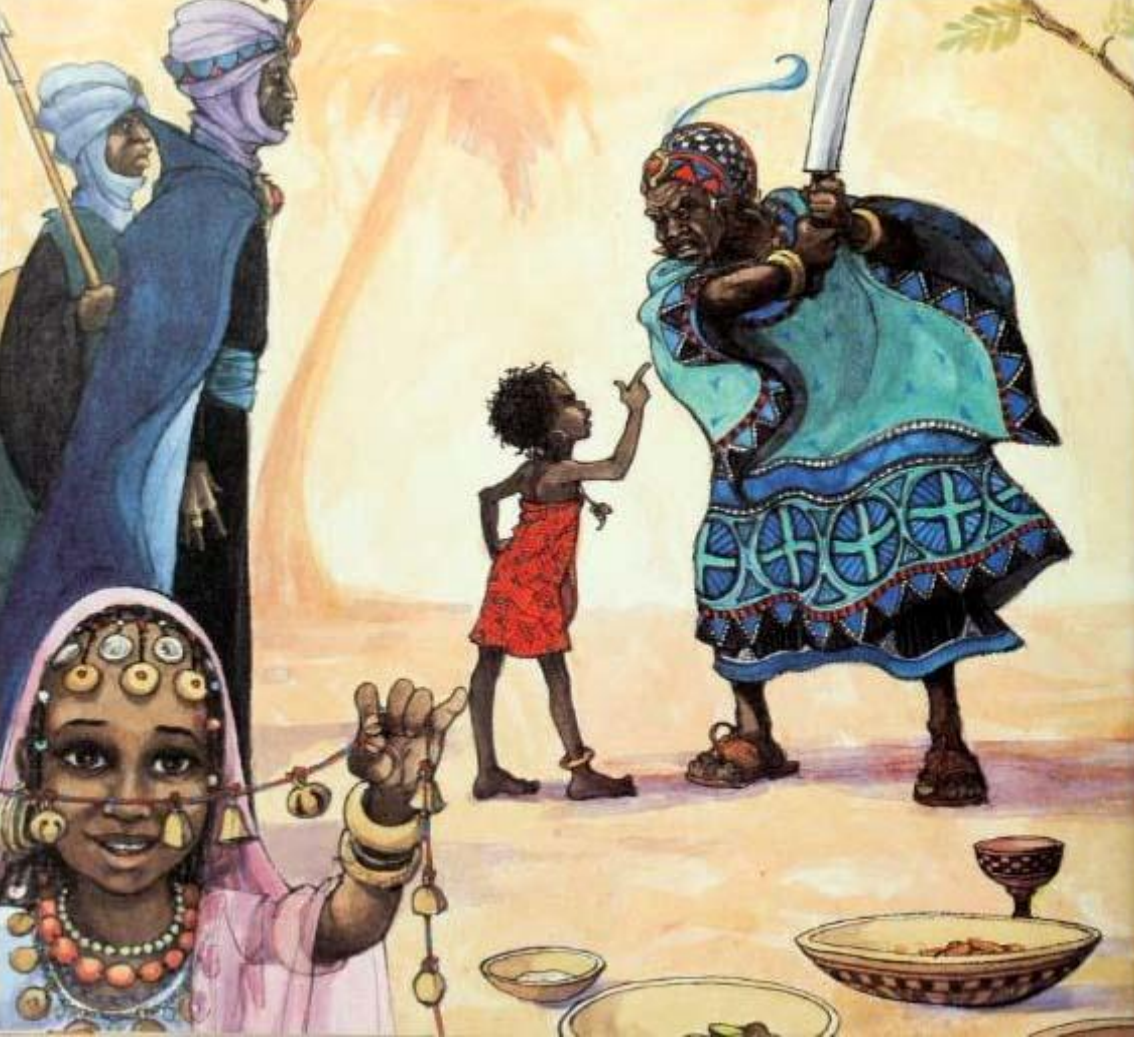
तित्याह ने घंटियों की आवाज़ सुनी तो वह बहुत प्रसन्न हुई. वह उनके साथ खेलने लगी. वह मुंह खोल कर हँसने लगी. मान्तह ने झट से आम का एक टुकड़ा उसके मुंह में डाल दिया. छोटी राजकुमारी घंटियों को देख कर इतनी मग्न हो गई थी कि बिना सोचे वह आम के टुकड़े को चबा कर निगल गई. फिर 'राजा से बुद्धिमान' ने मुर्गी का एक टुकड़ा खिलाया. घंटियाँ बजाते-बजाते उसने तित्याह को सारा खाना खिला दिया.

सम्राट ने मान्तह से कहा, "तुम बहुत ही बुद्धिमान युवती हो. मैं अपनी लड़की को देखभाल के लिए तुम्हें सौंपता हूँ."

क्रोधित राजा ने 'राजा से बुद्धिमान' को वहीं, उसी पल मारने के लिए अपनी कुल्हाड़ी उठाई.

"महाराज, रुकिए," उसने धीमे से राजा से कहा. "सम्राट के सामने अपने आप को अपमानित न करें. ध्यान रखें कि मैं आपके साथ महल में रहती हूँ. जो कुछ भी मेरा है वह आपका ही है, यह छोटी राजकुमारी भी. जब तित्याह बड़ी हो जायेगी तो उसका विवाह आपके साथ ही होगा, जैसा आप चाहते हैं."

राजा को मान्तह की बात की सच्चाई समझ आ गई. उसने मान्तह को अनुमति दी कि वह छोटी लड़की को अपने साथ घर ले आये.

जब वह सम्राट के राज्य से वापस चले तो सागर शांत था. पर जैसे ही वह सागर पार करने लगे, एक विशाल लहर में जहाज़ लगभग डूब ही गया. फिर लहर के पीछे से एक भयंकर समुद्री दैत्य आगे आया. वह एक बाओबाब पेड़ से भी बड़ा था. उसके सात सिर थे. उसका हर मुंह आग और भाप उगल रहा था.

"राजकुमारी कहाँ है?" दैत्य ने गरज कर कहा. "राजकुमारी मुझे दे दो."

सिपाहियों ने दैत्य को तीर मारे लेकिन उनके तीर उसके शल्कों से टकरा कर सागर में गिर गये.

"उसकी आँखों में मारो!" 'राजा से बुद्धिमान' ने चिल्ला कर कहा. लेकिन उस भयानक जीव ने सैनिकों को इतना भयभीत कर दिया था कि उनके हाथ कांपने लगे और अधिकतर तीर निशाने पर न लगे. शीघ्र ही उनके पास एक ही तीर बचा था लेकिन दैत्य के चार सिर अभी भी बचे थे.

“हम क्या करें?” सैनिकों ने राजा से पूछा.

“राजकुमारी उसे दे दो,” डर से कांपते हुए राजा चिल्लाया. “हमें अपने आप को बचाना है.”

‘राजा से बुद्धिमान’ ऐसा नहीं होने दे सकती थी. “अपना तीर-कमान मुझे दो,” उसने उस सिपाही से कहा जिसके पास अंतिम तीर था. “मैं उसे मार सकती हूँ.”

राजा उस पर चिल्लाया. “तुम? तुम क्या कर सकती हो?” लेकिन सिपाही ने तीर-कमान ‘राजा से बुद्धिमान’ को दे दिया.

तीर-कमान को अपने पीछे छिपा कर, ‘राजा से बुद्धिमान’ समुद्री दैत्य के सामने खड़ी हो गई और अचानक चिल्लाने लगी, “ओह नहीं, ओह नहीं, पहले तुम आये और अब अपने भाई को साथ ले आये हो. अब हमारा क्या होगा?”

उसकी बात सुन कर दैत्य बहुत हैरान हुआ. वह तो समझता था कि अपनी तरह का वह एक अकेला दैत्य था. उसने अपने दायें और बाएं देखा. अपने भाई की झलक पाने के लिए उसके सिर हर दिशा में घूम रहे थे.

“क्या तुम उसे देख नहीं पा रहे?” दाईं और संकेत करते हुए ‘राजा से बुद्धिमान’ चिल्लाई. “वह वहाँ है, तुम से भी बड़ा. ओह नहीं, ओह नहीं!”

जिस ओर ‘राजा से बुद्धिमान’ ने संकेत किया था, दैत्य ने अपने चारों सिर उस ओर घुमाये. जैसे ही उसकी सारी आँखें एक ओर देखने लगीं, मान्तह ने कमान उठाई और निशाना लगाया. उसने एक तीर से दैत्य की आठों आँखों को भेद दिया. उसके भयानक सिर आग उगल रहे थे, लेकिन वह डूब कर सागर के नीचे चला गया.

सुंदर राजकुमारी के साथ राजा का दल वापस आ गया. सातों गाँव के लोग उनका स्वागत करने और उनकी यात्रा की कहानी सुनने के लिए इकट्ठा हो गया. राजा ने उन्हें बताया कि उसने राजकुमारी को विवाह के लिए जीता था और अपने जहाज़ को एक भयंकर दैत्य से बचाया था. लेकिन उसकी कायरता और कुटिलता से चिढ़ कर सैनिकों ने लोगों को सच्ची कहानी सुना दी. उन्होंने बताया की 'राजा से बुद्धिमान' की वीरता और सूझबूझ के कारण ही वह सब जीवित थे.
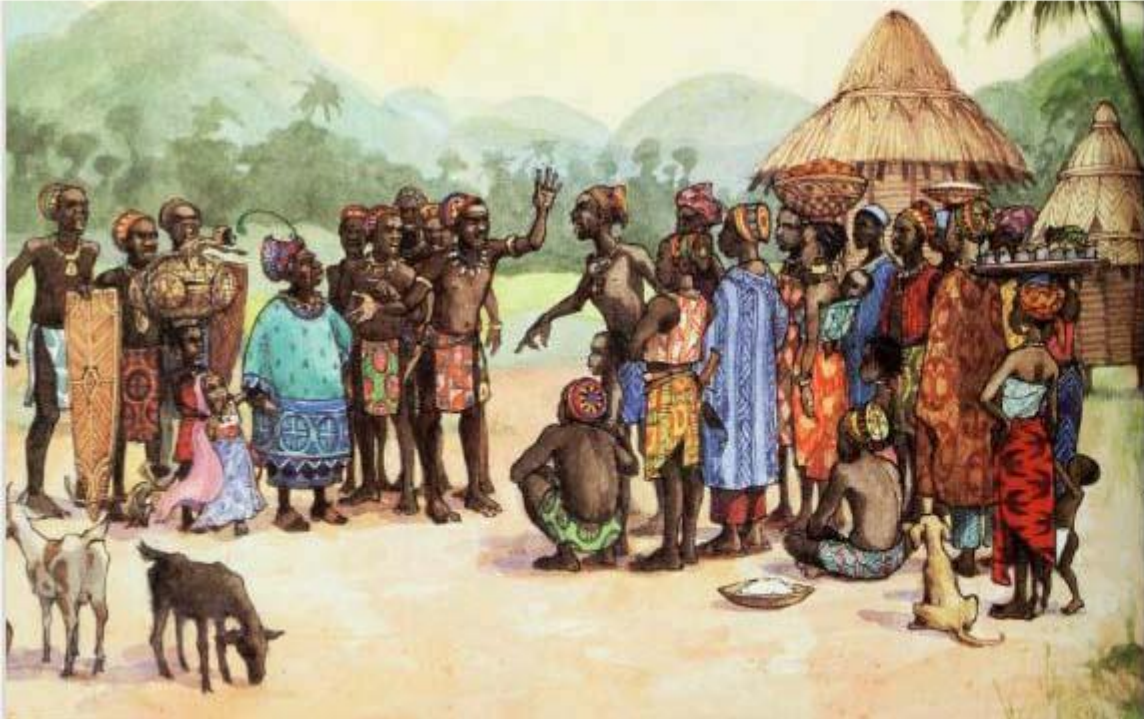
जब लोगों को सच्चाई पता चली तो उन्होंने राजा को उसके महल से बाहर निकाल दिया और उसे सात गाँव से दूर भगा दिया. उन्होंने मान्तह को अपनी रानी बना लिया.

रानी मान्तह ने बुद्धिमानी से सात गाँव पर अच्छा राज्य किया. उसने तित्याह को पशुओं के साथ बात करना सिखाया. छोटी राजकुमारी ने उन जंगली जानवरों से मित्रता कर ली जो अकसर महल के पास आ जाते थे. मान्तह के राज्य में लोग सम्पन्न थे और सब ओर शान्ति थी.